# आलोचना

त्रैमासिक

नामवर सिंह

(1926 - 2019)

# आलोचना

त्रैमासिक

अंक ६५, भाग -२, २०२४

प्रधान सम्पादक
नामवर सिंह

सम्पादक
आषुतोष कुमार
संजीव कुमार

सहसम्पादक
आर. चेतनक्रान्ति

कला सम्पादक
हरीष आनन्द

प्रबन्ध सम्पादक
अषोक महेष्वरी

अंक ६५, भाग -२, २०२४

यह अंक : 65
व्यक्तिगत सदस्यों के लिए

सर्वाधिकार सुरक्षित
आलोचना में प्रकाषित रचनाओं के साथ राजकमल प्रकाषन प्रा. लि.
या संपादकों की सहमति होना आवष्यक नहीं है।

प्रकाषन के लिए सामग्री दो पंक्ति छोड़कर (डबल स्पेस) साफ़ टाइप
की हुई होनी चाहिए और निम्न पते पर ही भेजी जानी चाहिए

| S. No. | Content | Author's | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | शिक्षण में परम्परागत पद्धति एवं शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन। | Seema Tripathi<br>Dr. Jay Prakash Singh | 1-5 |
| 2 | SALMAN RUSHDIE'S MIDNIGHT'S CHILDREN: A POSTCOLONIAL EPIC OF IDENTITY AND NATIONHOOD IN INDIA | Dr Subhash Chander<br>Jyotsna Bagerwan | 6-11 |
| 3 | सामाजिक समरसताः गांधी के विचारों का एक अध्ययन | बसन्ती दाधीच | 12-19 |
| 4 | भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था तथा जाति प्रथा | डॉ. बलबीर सिंह | 20-24 |
| 5 | उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अधिगम शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन | रेहाना उस्मानी<br>डॉ. गिरिराज भोजक | 25-42 |
| 6 | ''जयपुर जिले के विभिन्न प्रकार, के विद्यालयों में विद्यार्थियो के अनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन'' | अनुराधा षर्मा<br>डॉ. सरोज राय | 43-50 |
| 7 | दुर्गासप्तषती में वर्णित शक्ति स्वरूपों का आध्यात्मिक महत्व | रेवतीरमण शर्मा<br>प्रो. दामोदर शास्त्री | 51-54 |
| 8 | वॉलीबाल खिलाड़ियों के व्यक्तित्व पर योग का प्रभाव | प्रो. सरोज गर्ग<br>रघुनाथ जाट | 55-66 |
| 9 | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य संतोष, समायोजन, मनोबल एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन | प्रो. सुषमा सिंह<br>सुधीरा | 67-89 |
| 10 | ऑनलाइन शॉपिंग के फायदे एवं नुकसान | प्रिया मिश्रा<br>डॉ. राजेश वर्मा | 90-93 |
| 11 | भारतीय ज्ञान परम्परा में साहित्य की भूमिका | डॉ. भावना शर्मा | 94-97 |
| 12 | भारतीय ज्ञान परम्परा और व्यक्तित्व निर्माण | डॉ. ललिता शर्मा | 98-102 |
| 13 | पंचायतीराज रू महिला सरपंच का आदर्श और व्यवहार | रतिलाल अमीन<br>डॉ. साहिल श्रीवास्तव | 103-111 |

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

# शिक्षण में परम्परागत पद्धति एवं शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन।

**Seema Tripathi**
Research Scholar, Jain Vishva Bharati Institute , Ladnun

**Dr. Jay Prakash Singh**
Assistant Professor, Jain Vishva Bharati Institute , Ladnun

**प्रस्तावना**

'शिक्षा', शिक्षक एंव बालक के बीच की अन्तः क्रिया है। प्रारम्भ में शिक्षा शिक्षक केन्द्रित हुआ करती थी। उस समय शिक्षक को ज्यादा महत्त्व दिया जाता था बालक को नहीं, किन्तु वर्तमान समय में शिक्षा तथा शिक्षण पद्धति में बहुत परिवर्तन आए है। शिक्षा अब शिक्षक केन्द्रित नहीं है बल्कि वर्तमान में शिक्षा शिक्षार्थी केन्द्रित हो गई है। बालक की रूचि के अनुसार विभिन्न विषय वस्तुओं को रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए शिक्षक शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग करते है। शिक्षण में दृश्य सामग्री, श्रव्य सामग्री अथवा दोनो दृश्य–श्रव्य सामग्री द्वारा विद्यार्थी की अभिरूचि व अभिवृत्तियों को विकसित किया जा सकता है। शिक्षण अधिगम सामग्री विषय को स्थाई रूप से सीखने व समझने में सहायक होती है। शिक्षक के अधिगम सामग्री द्वारा किए गए शिक्षण का प्रभाव परम्परागत शिक्षण की तुलना में अधिक पड़ता है। अधिगम सामग्री पाठ को रोचकता प्रदान कर उसे बोधगम्य बनाती है तथा अनुभवों द्वारा ज्ञान प्रदान करती है।

शिक्षण अधिगम सामग्री छात्रों के ध्यान को शिक्षण अधिगम की ओर आकर्षित करती है, तथा शिक्षण में विविधता उत्पन्न करने में सहायक होती है। शिक्षण अधिगम सामग्री छात्रो को मानसिक रूप से तैयार करती है। साथ ही प्रदर्शित सामग्री के कौनसे शिक्षण बिन्दुओं पर ध्यान देना है, यह भी स्पषट करती है। सहायक सामग्री, विषय की निरसता और जटिलता को समाप्त करने में सक्षम है। शिक्षण अधिगम सामग्री छात्रों को पर्यावरण एवं सामाजिक वातावरण के साथ प्रत्यक्ष अन्तः क्रिया का अवसर प्रदान करती है। इनके द्वारा भूतकाल की घटनाओं को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। यह व्यवहार परिवर्तन तथा अभिवृत्ति विकास में भी सहायक है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में सहायक सामग्री का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसकी सहायता से शिक्षण में स्थायित्वता तथा सजीवता आती है, एवं विद्यार्थियों की रुचि विषय में उत्पन्न होती है। पृथ्वी के विशाल भाग पर विभिन्न जटिल प्राकृतिक क्रियाएँ होती हैं। पर्याप्त सहायक सामग्री के द्वारा इन जटिल प्राकृतिक क्रियाओं का स्पष्टीकरण एंव प्रत्यक्षीकरण आसानी से कराया जा सकता है। इसके माध्यम से भौगोलिक विषयवस्तु को आकर्षक बनाकर सरलतापूर्वक समझाया जा सकता है जिसके द्वारा सामाजिक विज्ञान शिक्षण को अधिक स्पष्ट व सजीव बनाया जा सकता है। विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने एंव विषय वस्तु को उत्साह पूर्वक पढ़ने में सहायक सामग्री का महत्त्वपूर्ण योगदान होतां है।

अध्यापन के दौरान विषय वस्तु को समझाते समय शिक्षक जिन–जिन संसाधनों या उपकरणों का प्रयोग करता है, वह शिक्षण अधिगम सामग्री कहलाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का एक लक्ष्य यह भी रहा है कि पाठ्य विषयों को रोचक, बोध गम्य, सृजनात्मक एवं आकर्षक बनाने के लिए कक्षागत शिक्षण में अधिगम सामग्रियों का अधिकाधिक उपयोग किया जाये। विषय वस्तु में निर्धारित लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए उपयोगी शिक्षण अधिगम् सामग्रियों के निर्माण एंव प्रयोग पर विशेष जोर दिए जाने की अनुशंसा की गई है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

## शिक्षण अधिगम सामग्री का वर्गीकरण

**दृश्य शिक्षण अधिगम सामग्री सामग्री**

यर्थाथ वस्तु नमूना, प्रतिमान,
चार्ट, चित्र, रेखाचित्र, ग्राफ,फ्लेनेट
बोर्ड, मैजिक लैण्टर्न, एपिस्कोप
सी.सी.टी.वी., एल.सी.डी. भाषा प्रयोगशाला
बुलेटिनबोर्ड, फोटो

**श्रव्य शिक्षण अधिगम सामग्री**

रेडियो, ट्रांजिस्टर,
टेपरिकॉर्डर, शिक्षण मशीन, ग्रामोफोन

**दृश्य–श्रव्य शिक्षण अधिगम**

चलचित्र, दूरदर्शन, वीडियोटेप,
कम्प्यूटर कान्फ्रेन्सिग अभिनय प्रयोग,
एपिडायस्कोप प्रोजेक्टस्लाइड, पीपीटी

**समस्या का औचित्य–**

प्रस्तुत समस्या का औचित्य वर्तमान शिक्षण अधिगम कार्यक्रम में गुणात्मक सुधार लाना है। आज भी सामाजिक विज्ञान विषय को परम्परागत पद्धति द्वारा पढाया जाता है इस कारण प्रशिक्षण प्राप्त सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षक भी अपने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अभियोग्यता, अभिरुचि तथा कौशलों का विकास नहीं कर पाते जिससे शिक्षा में बालकों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है ना ही वे सक्रिय होकर सीख पाते है। विद्यार्थियों को ऐसी अधिगम सहायक सामग्रियों द्वारा ज्ञान दिया जाए जो वास्तविक लगे तथा शिक्षण में उपयोगी हो साथ ही जो विद्यार्थियों के ज्ञान को स्थायित्व प्रदान कर सकें। प्रारम्भ में शिक्षा शिक्षक केन्द्रित थी, किन्तु वर्तमान में शिक्षण पद्धति में परिवर्तन आया है। विषय–वस्तु को रोचक व प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने हेतु शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जाने लगा है। अतः शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री के द्वारा सामाजिक विज्ञान विषय की समझ विकसित करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है। जिसके कारण विद्यार्थी विषय की संकल्पनाओं को रटने की जगह समझ कर पढ़ने में रुचि ले सकेंगे।

**शोध के उद्देश्य –**

⇒ परम्परागत पद्धति एवं शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा शिक्षण करवाने पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

**शोध की परिकल्पना–**

⇒ परम्परागत पद्धति एवं शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा शिक्षण करवाने पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

**शोध अध्ययन की परिसीमाएँ–**

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

⇒ प्रस्तुत अध्ययन जयपुर जिले के स्वामी विवेकानन्द शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत ड़ी. एलएड. के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तक ही सीमित है।

⇒ शिक्षण हेतु डी.एलएड. के पाठ्यकम के विषय के रुप में केवल सामाजिक विज्ञान शिक्षण विषय का ही चयन किया गया है।

**शोध विधि–**

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव को जानने के लिए **प्रयोगात्मक विधि** का प्रयोग किया गया है।

**शोध में प्रयुक्त चर–**

**1 स्वतंत्र चर–**

शोध में स्वतंत्र चर शिक्षण अधिगम सामग्री एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति है।

**2 परतंत्र चर–**

शोध में परतंत्र चर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि है।

**जनसंख्या एवं न्यादर्श–**

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रुप में जयपुर जिले के स्वामी विवेकानन्द शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत ड़ी.एलएड. के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी है जिसमें से न्यादर्श के रुप में कुल 60 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को सोद्देश्यपूर्ण न्यादर्श के रुप में लिया गया है।

**शोध में प्रयुक्त उपकरण–**

शोधकर्त्री द्वारा प्रदत्त सकंलन हेतु निम्नांकित शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है–

1 परम्परागत पद्धति एवं शिक्षण अधिगम सामग्री पर आधारित स्वनिर्मित पाठ योजनाएँ।

2 सामाजिक विज्ञान शिक्षण विषय पर आधारित स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण।

**शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी–**

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का उपयोग किया गया है।

**प्रदत्त संकलन व विश्लेषण–**

प्रस्तुत शोध कार्य में सामाजिक विज्ञान शिक्षण विषय पर आधारित स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण को प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह पर शिक्षण कार्य के उपरांत प्रशासित करके प्रदत्त संकलन किये गये है। संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण उपर्युक्त सांख्यिकी का उपयोग करके प्राप्त परिणामों का सारणीयन किया गया है जिसकी परिकल्पना के सन्दर्भ में विश्लेषण व व्याख्या की गयी है।

**तालिका–1 : परम्परागत पद्धति एवं शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा शिक्षण करवाने पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।**

| समूह | प्रशिक्षणर्थियों की संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी मान | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|
| नियंत्रित समूह(परम्परागत पद्धति द्वारा शिक्षण) | 30 | 72.37 | 7.58 | 6.24 | अस्वीकृत |

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रायोगिक समूह(शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा शिक्षण) | 30 | 82.68 | 6.25 | | |

स्वतन्त्रता का अंश (df) = 58

.05 स्तर पर मानक मान – 1.99

.01 स्तर पर मानक मान – 2.65

**उपर्युक्त तालिका–1** से स्पष्ट होता है कि दोंनो समूहों प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों के परीक्षण पूर्व प्राप्तांकों के मध्य टी गुणांक का मान गणना से 6.24 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता के अंश 58 पर 0.01 तथा 0.05 स्तर के दोनों मानक मानों से अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है अर्थात् परम्परागत पद्धति एवं शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा शिक्षण करवाने पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

**निष्कर्ष–**

प्रस्तुत शोध में संकलित प्रदत्तो के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर दोनो विधियों (परम्परागत पद्धति एव शिक्षण अधिगम सामग्री) से शिक्षण करवाने पर सार्थक अन्तर पाया गया जिसका प्रमुख कारण यह है कि सहायक सामग्री द्वारा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने विषयवस्तु को शिक्षण के दौरान सक्रिय रहकर ध्यान केन्द्रित करके रुचि लेते हुए सीखा, जिसका प्रभाव उनके सीखने की गति एवं परिणाम में स्पष्ट दिखाई दे रहा है। अतः यह स्पष्ट होता है कि परम्परागत पद्धति एंव शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा शिक्षण का सामाजिक अध्ययन विषय के सन्दर्भ में उपलब्धि परीक्षण के आधार पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा शिक्षण परम्परागत पद्धति की तुलना मैं अधिक प्रभावशाली रहा।

**शैक्षिक निहितार्थ–**

प्रदत्तों के विश्लेषण एवं व्याख्या से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर स्पष्ट होता है कि वर्तमान में शिक्षा का स्वरूप परम्परागत शिक्षण पद्धतियों से उन्नत करना संभव नहीं है। 21वीं सदी के इस युग में शिक्षण में सहायक सामग्रियों को अपनाकर ही शैक्षिक उपलब्धि को उच्च किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध के परिणाम भी परम्परागत पद्धति की तुलना में शिक्षण सहायक सामग्रियों की प्रभावशीलता को प्रदर्शित करते हैं। अतः 21वीं सदी के शिक्षाशास्त्र में शिक्षण सहायक सामग्रियाँ प्रभावी रूप में शिक्षकों के शिक्षण कौशलों के विकास एवं शिक्षार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि के उन्नयन हेतु उपयोगी हैं।

**संदर्भ ग्रंथ सूचीः–**

**पुस्तकेंः–**

(1) कपिल, एच.के. (2006) ''अनुसंधान विधियॉ'' एचे.पी. भार्गव बुक हाउस 4/230,कचहरी घाट, आगरा

(2) शर्मा, आर.के.(2009) ''शिक्षा सिद्धान्त एवं आधुनिक भारत में शिक्षा''' राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा–02, पेज नं. 120–133.

(3) शर्मा, आर.ए. (2011) ''शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रकिया'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

(4) सिंह, एच.एनः ''भूगोल शिक्षण'' पेज नं. 22–27

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

(5) त्यागी, गुरूशरण दासः(2008) ''नागरिक शास्त्र शिक्षण'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पेज नं. 203–210

जर्नल्सः–

(6) SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE (srjis) AUG-SEPT, 2015 page no. 2957–2966

(7) श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका,अप्रैल 2019,पेज न. H–34 to H–36

(8) इण्डियन जर्नल्स ऑफ रिसर्च, फरवरी, 2020,पेज नः 149–150

पीएच.डी. शोध कार्यः–

(9) लुकोस एम. रोसम्मा (2005) "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक तैयारी व उपलब्धि स्तर पर सहायक सामग्री के प्रयोग के प्रभाव का अध्ययन"।

(10) जोशी, हरीश चन्द्र (2012) ''उच्च प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों द्वारा दृश्य–श्रव्य संचार माध्यमों का उपयोग"।

(11) सोलंकी (2014) ''कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन व परम्परागत अनुदेशन का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अवधान व प्रतिक्रिया के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया।